गुरमत संगीत की उत्पति और विकास

डॉ. हरजस कौर
सह–आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, रूपनगर

सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरू नानक देव जी ने अपने आप को 'खस्म का ढ़ाड़ी'[1] कहते हुए उस 'खालक के आदेश'[2] को लोगों तक संचारित करने के लिए शब्द कीर्तक को माध्यम बनाया। इस शब्द कीर्तन में संगीत द्वारा 'खस्म की वाणी'[3] को कुल कायनात तक संचारित करने के लिए मौलिक और विलक्षण रूप इस्तेमाल किया। शब्द कीर्तक का विधि–विधान और प्रस्तुति प्रक्रिया को 'गुरमत संगीत' के तौर पर जाना जाता है। श्री गुरू नानक देव जी की वाणी की आमद और वाणी की प्रस्तुति दोनों में संगीत का विशेष स्थान है। श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी की प्रस्तुति के लिए अपने साथ संगीत निपुण रबाबी भाई मरदाने को अपना संगी चुना।[4]

श्री गुरू नानक देव जी की रचना प्रक्रिया और संगीत के गहरे सम्बन्ध के अनेक प्रमाण जन्म साखी रचनाओं में उपलब्ध हैं।[5] इनके प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि श्री गुरू नानक देव जी की वाणी अवतरण के समय संगीत के संचार माध्यम के तौर पर धुनीमान था। इसमें शब्द और संगीत अलग–अलग नही प्रतीत होते अतः यह वाणी रूप शब्द और संगीत की संयुक्त/सम्मिलित पेशकारी के तौर पर प्रभु–कीर्तन के तौर पर मूर्तीमान हो रहा है। इस तरह श्री गुरू नानक देव जी की वाणी–रचना प्रक्रिया और इसकी प्रथम प्रस्तुति गुरमत संगीत परंपरा की उत्पति है।

श्री गुरू नानक देव जी जब भी किसी नवीन स्थान पर जाते वहां सर्वप्रथम शब्द कीर्तन की ध्वनि गुंज्जन करते इस सम्बन्ध में कई साखीया[6] उपलब्ध हैं। वाणी की यह प्रस्तुति उस स्थान के लोगों को उपदेश देने हेतु की जाती थी। निसंदेह इसका संचार माध्यम संगीत ही था। श्री गुरू नानक देव जी की तरफ से वाणी के संचार के लिए विभिन्न शैलियां, भिन्न–भिन्न प्रकार के रागों का प्रयोग करना स्पष्ट करता है कि आप ने अपनी संगत स्रोत श्रेणी के स्तर पर मानसिकता को मुख्य रखा।

उक्त विशलेषण से स्पष्ट है कि गुरमत संगीत की उत्पति श्री गुरू नानक देव जी द्वारा हुई। गुरमत संगीत श्री गुरू नानक देव जी से लेकर बाकी गुरू साहिबान के समय से निरंतर विकास कर रहा था। सभी गुरू साहिबान ने इस परम्परा को वाणी और संगीत

के विभिन्न रूपों द्वारा इस परंपरा को आगे बढ़ाया और गुरमत संगीत प्रबन्ध को व्यवहारिक क्रम द्वारा निर्मित किया। इस विकास की गाथा श्री गुरू नानक देव जी से प्रारम्भ हो कर दस गुरू साहिबान के जीवन काल तक फैली हुई है। इस परम्परा के विकास को श्री गुरू नानक देव जी और बाकी गुरू साहिबान के संदर्भ में क्रमवार विचारों की समता है।

श्री गुरू नानक देव जी

श्री गुरू नानक देव जी ने गुरमत संगीत का आरम्भ किया। आप ने अपनी वाणी के उच्चारण से विभिन्न रागों और गायन रूपों का प्रयोग किया।

राग सिरी, माझ, गऊड़ी ;गुआरेरी, चेती, गऊड़ी बैरागण, गऊड़ी पूरबी दीपकी, गऊड़ी पूरबी, गऊड़ी दीपकी, आसा ;आसा काफी, गूजरी, वडहंस वडहंस दखणी, सोरठ, ध्नासरी, तिलंग, सूही ;सूही काफी, बिलावल ;बिलावल दखणी, रामकली ;रामकली दखणी, मारू ;मारू दखणी, तुखारी, भैरउ, बसन्त, सारंग, मलार, प्रभाती ;प्रभाती विभास, प्रभाती दखणी

गायन रूपः अष्टपदी, पदे, छंत, वार

श्री गुरू नानक देव जी ने गुरमत संगीत के विकास के लिए करतारपुर साहिब ;जो आजकल पाकिस्तान में है को कीर्तन केन्द्र के तौर पर स्थापित किया जिसमें कीर्तन की परंम्परा को संस्थागत रूप प्रदान किया गया।[7]

श्री गुरू अंगद देव जी

श्री गुरू अंगद देव जी ने श्री गुरू नानक देव जी द्वारा चलाई परम्परा का संस्थागत रूप में प्रचलन किया। इस सम्बन्ध में कीर्तन का व्यवहारिक परंम्परागत प्रयोग था। श्री गुरू अंगद देव जी की वाणी श्लोकों के रूप में सिरी, माझ, आसा, सोरठ, सूही, रामकली, मारू, सारंग, मलार राग अधीन श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित है।

श्री गुरू अंगद देव जी के दरबार में भाई मरदाने का पुत्रा भाई सजादा, भाई सादू, भाई बादू, भाई रजादा, भाई सत्ता और बलवंड़ सुबह–शाम गुरवाणी कीर्तन की परम्परा कायम रख रहे थे।

श्री गुरू अमरदास जीः

सिक्खों के तीसरे गुरू अमरदास जी ने अपनी वृद्व अवस्था में वाणी की रचना की जो आपका गुरमत संगीत के प्रति वर्णनयोग योगदान है।

रागः सिरी, माझ, गऊड़ी ;गुआरेरी, गऊड़ी बैरागण, गऊड़ी, पूर्वी, आसा ;आसा काफीद्ध, गूजरी, वडहंस, सोरठ, ध्नासरी, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, भैरउ, बसन्त ;बसन्त हिडोंल, सारंग, मलार, प्रभाती ;प्रभाती विभास।

गायन रूपः पदे, अष्टपदी, छंत, सोहले, वार।

श्री गुरू अमरदास जी की रामकली राग के अधीन 'आनंद साहिब' की रचना महान रचना है जो सिक्ख धर्म में नित्तनेम की वाणीओं में से एक है और हर समागम के अन्त पर इस का गायन करने की प्रथा है।

श्री गुरू अमरदास जी के दरबार में भाई सत्ता और बलवंड़ के बिना डल्ला के निवासी भाई पांध और बुल्ला रबाबी गुरवाणी का गायन करते थे।'कानुन–ऐ–मौसिकी' पुस्तक के करता ने पन्ना 306 पर इसका उल्लेख किया है कि तीसरी पातशाही श्री गुरू अमरदास जी ने 'सारन्दा' साज का निर्माण किया।[8]

श्री गुरू रामदास जी

श्री गुरू रामदास जी ने सिक्ख गुरूओं द्वारा चलाई गुरवाणी कीर्तन परंपरा को ओर विकसित किया। आप ने विभिन्न रागों और गायन रूपों के अधिन वाणी उच्चारन की।

रागः सिरी, माझ, गऊड़ी ;गऊड़ी गुआरेरी, गऊड़ी वैरागण, गऊड़ी पूर्वी, गऊड़ी माझद्ध, आसा ;आसावरी, आसा काफीद्ध, गूजरी, देवगंधरी, बिहागड़ा, वड़हंस, सोरठ, ध्नासरी, जैतसरी, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, नट नारायण, गोंड, मालीगऊड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरऊ, बसन्त, सारंग, मलार, कानड़ा, कल्याण ;कल्याण, भोपालीद्ध प्रभाती ;प्रभाती विभास

गायन रूपः पदे, अष्टपदी, पड़ताल, घोड़ीयां, छंत, वार।

श्री गुरू रामदास जी ने 'पड़ताल' नामक शास्त्राी शैली जो ताल पर आधरित है को जन्म दिया। पड़ताल गायन शैली अनुसार शब्द की स्थाई की तुक में एक ताल प्रयोग की जाती है और विभिन्न अन्तरों पर भिन्न–भिन्न तालों का प्रयोग होने के बावजूद राग एक ही रहता है। पड़ताल शैली गुरवाणी संगीत के लिए ही नहीं बल्कि भारतीय संगीत

में भी महानता और विलक्षणता की धरनी है। श्री गुरू रामदास जी की 7 रागों के अधिन 19 पड़तालें श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज हैं। लोक–कावि रूप छंत श्री गुरू रामदास जी की वाणी में विष्शिट उत्मता का धरनी है जिनका बाद में 'आसा की वार' के तौर पर गायन किया जाने लगा। श्री गुरू रामदास जी के दरबार में भाई सत्ता और बलवंड कीर्तनीय सुबह–शाम कीर्तन करते थे।

श्री गुरू अर्जन देव जीः

श्री गुरू अर्जन देव जी ने गुरवाणी कीर्तन द्वारा शास्त्री संगीत का खूब प्रचार किया। आप ने विभिन्न रागों में वाणी का उच्चारन किया जो श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज हैं।

राग– सिरी, माझ, गऊड़ी ;गऊड़ी गुआरेरी, गऊड़ी चेती, गऊड़ी बैरागण, गऊड़ी पूर्वी, गऊड़ी माझ, गऊड़ी मालवा, गऊड़ी माला, आसा ;आसा काफी, आसावरी, गूजरी, देवगंधरी ;देवगंधरी, बिहागड़ा, सोरठ, वड़हंस, धनासरी, जैतसरी, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गोंड, रामकली, नट नारायण ;नट, मालीगऊड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरऊ, बसन्त, सारंग, मलार, कानड़ा, कल्याण, प्रभाती ;प्रभाती बिभास, बिभास प्रभाती

गायन रूपः पदे, अष्टपदी, पड़ताल, छंत, वार, सोहले, अंजुलीयां

वर्तमान समय के गुरू ग्रन्थ साहिब जी की संपादना श्री गुरू अर्जन देव जी की महान देन है। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की संपादना का आधर रागात्मक है जो विश्व के धार्मिक ग्रन्थों में विलक्षणता का धरनी है।

श्री गुरू अर्जन देव जी के दरबार में भाई सत्ता और बलवंड के बिना भाई किदार, झांझु और मुकन्द जैसे रागी रबाबीयों ने गुरवाणी संगीत द्वारा शास्त्राी संगीत का खूब प्रचार किया। गुरू अर्जन देव जी के समय ही किसी कारण भाई सत्ता और बलवंड गुरू साहिबान के साथ नाराज हो गए। इस पर श्री गुरू अर्जन देव जी ने साधारण सिक्ख संगत को कीर्तन करने का आदेश दिया। इस पर अशिक्षत साधरण सिक्ख संगत ने लोक संगीत के तौर पर गुरवाणी का गायन शुरू किया। इस तरह गुरू अर्जन देव जी के समय गुरवाणी कीर्तन क्रियात्मक तौर पर रागी रबाबी कस्बी लोक यानि सुशिक्षित लोक और अशिक्षित साधरण सिक्ख संगत दो र्वगों में प्रवेश हुआ। गुरवाणी कीर्तन की ;शास्त्राी. लोक संगीतद्ध दोनों परम्पराएँ तब से लेकर अब तक उसी तरह चली आ रही हैं। श्री गुरू अर्जन देव जी के समय गुरवाणी कीर्तन के लिए सारन्दा और तबला

;जोड़ीद्ध साज का प्रयोग किया जाने लगा। इससे पहले रबाब और मध्यम वीण ;सितार और तंबुरे का प्रयोग ज्यादा हुआ था।[9] श्री गुरू अर्जन देव जी सारन्दा साज में विशेष निपुणता रखते थे।[10]

श्री गुरू हरगोविन्द जी

श्री गुरू हरगोविन्द जी ने सिक्ख गुरूओं द्वारा चली आ रही कीर्तन परंम्परा को उसी तरह कायम रखा। आप जी के बारे में यह कहा जाता है कि आप ने श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित नौं वारों पर ध्वनियों के सिरलेख लिखे।[11] श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित ध्वनियों के सिरलेख अनुसार वारों का गायन श्री गुरू हरगोबिन्द जी के समय किया जाता था।

श्री गुरू हरगोविन्द जी के समय गुरवाणी कीर्तन परंम्परा के साथ ढ़ाड़ी गायकी गुरू दरबार में आई। भाई नत्था और अबदुल्ला श्री गुरू हरगोविन्द साहिब के दरबार के ढाड़ी और रबाबी थे। इन्होनें सिक्ख सैना में जोश पैदा करने के लिए वीर रस प्रदान करने हेतु वारों का गायन कर के गुरू दरबार की खुशियां प्राप्त की। भाई बाबक गुरू हरगोविन्द साहिब के दरबार में रबाबी के साथ–साथ महान योद्धा भी थे, जिन्होने अमृतसर की जंग में वीरता दिखाई। श्री गुरू हरगोविन्द साहिब के समय में ही वारों के गायन के लिए वीर रस प्रदान करने हेतु सारंगी साज गुरू दरबार मे प्रवेश किया।

श्री गुरू हरिराय जी, श्री गुरू हरिकृष्ण जीः

श्री गुरू हरिराय जी और श्री गुरू हरिकृष्ण जी हालात अनुकूल न होने के कारण वाणी रचना नहीं कर सके परन्तु इन्होने श्री गुरू नानक देव जी द्वारा चलाई गई कीर्तन की रीत को बड़े प्यार और सन्मान से कायम रखा।

श्री गुरू तेग बहादुर जीः

श्री गुरू तेग बहादुर जी ने गुरमत और संगीत प्रथा की जो परम्परा पहले गुरू साहिबान ने बनाई थी उनको शक्ति प्रदान की। आप ने कई रागों, गायन रूपों में वाणी का उच्चारन किया जो श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज हैं।

राग– गऊड़ी, आसा, देवगंधर, बिहागड़ा, सोरठ, ध्नासरी, जैतसरी, टोड़ी, तिलंग ;तिलंग काफी, बिलावल, मारू, बसन्त ;बसन्त हिंडोल, सारंग, जैजावंती

गायन रूप : पदे, अष्टपदी

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में राग जैजावंती के अन्तर्गत श्री गुरू तेग बहादुर जी की रचना उपलब्द है।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जीः श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी संत, कवि, संगीतकार के साथ–साथ एक महान वीर योद्धा भी थे जिन्होने अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए सिक्ख कौम और संगीत को नई दिशा प्रदान की। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की वाणी रचना का संग्रह 'दसम ग्रन्थ' है। सिक्ख धर्म में आदि ग्रन्थ श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के बाद यह दूसरा विस्तृत ग्रन्थ है।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की संगीतक प्रतिभा और परम्परा अनुसार गुरू जी ने अपने दरबार में 52 कवि रखे हुए थे जो गुरमत अनुसार कविताएं रचा करते थे। इनके इलावा भाई मददू और सददू रबाबी गुरू दरबार में 'आसा दी वार' का कीर्तन करते थे।[12]

सिक्ख धर्म के वर्तमान श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी जो गुरमत संगीत का सैद्धान्तिक आधर हैं। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज वाणी का संचार संगीत द्वारा करने के लिए वाणी का संपादन कार्य रागबद्धता के साथ किया गया। इस में विभिन्न रागों के अनुसार वाणी के भाग किये गये है। रागों के अधिन पहले सनातनी शास्त्री फिर लोक देसी काव्य रूप/गायन शैलियों को रखा गया है। यह राग प्रबन्ध, गुरमत संगीत प्रबन्ध वाणी के संचार को प्रवाहित करता है। इस गुरवाणी प्रबन्ध से संगीत प्रबन्ध की विलक्षण संगीत परंम्परा उजागर होती है। जिसका वैज्ञानिक आधार श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी हैं।

उक्त विचार स्पष्ट करते हैं कि गुरमत संगीत की उत्पति और विकास के संदर्भ में समूह गुरू साहिबान का भरपूर योगदान और श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी का महत्व भली–भांति प्रगट हो रहा है और यह भी सिद्ध होता है कि गुरमत संगीत की नई छवि इसके व्यवहारिक रूप को संगीत प्रबन्ध के तौर पर स्थापित करती है जिसका आधार श्री गुरू ग्रन्थ साहिब हैं। इस लिए गुरमत संगीत की उत्पति और विकास संबन्धी श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के गहरे और वैज्ञानिक अध्ययन से नए प्रमाण उपलब्ध हो सकते हैं।

सहायक स्रोत

खालक कऊ आदेस ढाड़ी गावण ;वार माझ, पऊड़ी 21, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब–पृष्ठ 148
हऊ आपहु बोल न जाणदा
मैं कहिआ सब हुकमाऊ जीऊ।। महल्ला ÿ, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब – पृष्ठ 763
जैसी मै आवै खसम की बाणी

तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो महल्ला û, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब – पृष्ठ 763
भला रबाब वजाईन्दा, मजलस मरदाना मीरासी भाई गुरदास दीआं वारां 11वीं, पऊड़ी 13 वीं
तब बाबे आखिआःमरदानियाः शब्द चित कर
तऊ बाझु वाणी सिर नहीं आवदी। तब गुरू बाबे आखिआ मरदानिया रबाब बजाए
भाई वीर सिंह, श्री गुरू नानक चम्तकार पुरर्बाध, पृष्ठ 306
ढाड़ी को गुर कहिऊ अलाए
हे मरदानपा तार बजाए
श्री सतगुरू तब शब्द उचारा
श्राग वड़हंसै लगै प्यारा।
जन्मसाखी श्री गुरू नानक शाह की, सन्त दास छिबर, संपाः डा गुरूदेव सिंह, पृष्ठ 174
सोदरु, आरती गावीए अमृत वेले जपु उचारा ।।
भाई गुरदास दीआं वारां 3वीं, पऊड़ी
हवाला तारा सिंह ;प्रो भूमिका श्री गुरू अमरदास राग रत्नावली
नरूला, डी एस गुरू नानक संगीतज्ञय, पृष्ठ 148
गुरमत संगीत विच वरतींदे साज, प्यारा सिंह, स्मृति ग्रन्थ, अदुत्ती गुरमत संगीत सम्मेलन, 1991
भाई जोध सिंह, श्री करतारपुर बीड़ के दर्शन, पृष्ठ 72
भाई सन्तोख सिंह, गुरप्रताप सूरज ग्रन्थ, पृष्ठ 577